International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 10 Issue 05, May 2020
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

समकालीन साहित्य तथा मानवीय मूल्य

डॉ राजेन्द्र गंगाधरराव मालोकर
हिन्दी वभाग प्रमुख
श्री निकेतन आर्ट्स कॉमर्स कालेज, नागपुर (महाराष्ट्र)

सार

आधिकारिक रूप से जब महिलाएं भागीदार होती हैं, तो सृष्टि के स्वामी नेतृत्व नहीं करते हैं, जब तक कि वे खुद को आश्वस्त नहीं कर लेते हैं कि यह निश्चित रूप से विशेष चीज है जिसे वे करने की उम्मीद करते हैं, फिर, वे इसके लिए वापस लौटते हैं और इसके माध्यम से प्रयास करने में सफल होते हैं , वे अधिक नाजुक पोत को उसके क्रेडिट का लगभग आधा देते हैंय अगर विफल हो जाता है, तो वे उदारतापूर्वक अपने आप को सब कुछ दे देते हैं। ये हैं अमेरिका की जानी–मानी लेखिका और लेखिका लिटिल वुमन, एक अनपढ़, रूखापन और दृढ़ता दिखाने वाली महिला और शुरुआती महिला प्रतिज्ञान साथी की घोषणाएं। यह मूल रूप से दुनिया के एक तरफ से शुरू होने वाले हर परिवार में स्क्रीन के पीछे की गड़गड़ाहट की आवाज हो सकती है।

परिचय

भारत आज अपने विकास और ग्रह पर अपनी स्थिति में एक दृष्टिकोण परिवर्तन के मुहाने पर खड़ा है। भारत में समाज सुधारकों और प्रचारकों को महिलाओं को उनके अंतिम बिंदुओं और बाधाओं से बाहर निकालने के उपक्रम को बढ़ावा देने के लिए मोटे तौर पर दो सदियों जैसी किसी चीज की आवश्यकता थी। 1951 में महिला सीमा में 9ः से 2011 के मूल्यांकन के अनुसार 65.46ः तक आश्चर्यजनक प्रगति, संसद में महिला प्रतिनिधित्व का 33ः कोर्स, प्रस्तावित महिला राष्ट्रीयकृत बैंक, बिल और महिला सुरक्षा की गारंटी देने वाले नए मानदंड, संवेदनशीलता और प्रसार डेटा सभी सामान्य चक्रों को गति देने की योजना बनाते हैं जो महिलाओं के समग्र विकास को आगे बढ़ाते हैं। सौदे क्या ये सभी अद्यतन एक मुद्रित प्रति के रूप में दर्ज किए गए हैं? क्या शब्दों में भी अनुकूल आत्मीयता दिखाई गई है? क्या वे उभर कर सामने आई हैं और भारतीय महिलाओं के दिमाग में बदलाव आया है?

अतीत की एक झलक शिक्षाप्रद क्षेत्रों में सृजन करने वाली महिलाओं के चित्रण को दर्शाएगी। हाल ही में भारतीय महिलाओं द्वारा किए गए कार्यों को मानव संचालित संदेहों के आलोक में गलत समझा गया। स्पष्ट रूप से जब पुरुष एजेंट मौलिक विषयों की देखरेख करते थे, तो मानक के साथ संघर्ष करने वाली महिलाओं ने सीधेपन की कमी को ध्यान में रखते हुए एक नियम के रूप में संलग्न आस–पास के क्षेत्र में अपने स्वयं के अनुभवों को प्रबंधित किया। यह 19वीं सदी में था जब महिलाओं

की समीक्षा तैयार की गई थी और वे मूल रूप से हमारे देश के स्वतंत्रता संग्राम के इर्द–गिर्द घूमते थे। वास्तव में व्यापक रूप से महिलाओं के लॉबिस्ट विश्वास संरचनाओं के ब्रह्मांड ने भारत के अंग्रेजी टुकड़े को प्रभावित करना शुरू कर दिया।

भारतीय महिला निर्माताओं ने हमारे पीस को एक वैकल्पिक रंग दिया है। जब हम इसे बनाने के बारे में समीक्षा करते हैं तो यह किताबों के बारे में होता है और साथ ही इससे दूर रहता है, संक्षिप्त कहानियाँ और संवेदनाएँ। पुस्तकों के सुधार से पहले, कुछ महिला पत्रकारों ने धुनें, लघु कथाएँ और नाटक बनाए। समय के विकास के साथ, महिला विश्लेषकों ने अपने कार्यों में महिला अनुभवों को दोहराया है और इसने भारतीय विकास के सामाजिक और भाषाई घटनाओं को प्रभावित किया है।

भारतीय निर्माण ने सरोजिनी नायडू जैसे शोधकर्ताओं के साथ जल्दबाजी की, जिन्होंने पाठकों को अपने शोधों से चकित कर दिया। भारत की ताकत के संभावित क्षेत्रों में महिलाओं के संयुक्त प्रयास को सापेक्ष रूप में व्यक्त किया गया। 20 वीं शताब्दी में, महिलाओं के निर्माण को प्रगति के गंभीर और महिलाओं के लॉबिस्ट मौखिककरण के लिए ताकत के प्रमुख क्षेत्रों के रूप में देखा गया था, विशेष रूप से हाल के बीस वर्षों में। महिला असंतुष्ट विषयों का उपयोग नयनतारा संगल और रमा मेहता द्वारा भी किया गया है। कमला दास, अनीता नायर और सुसान विश्वनाथन के करीबी के आसपास पड़ोस के विषयों को ढाला गया है। चित्रा बनर्जी दिवाकरुनी, सुसान नामजोशी और अनुराधा मारवाह रॉय ने अपने विषयों में वैधता शामिल की। हमारे समय की पुस्तकों में हम महिलाओं की आंतरिक जलन, हड़ताली और उत्साह केंद्रों का अनुभव करते हैं, महिला मन को बरी कर दिया गया था जिसकी कभी कोई उपलब्धता नहीं थी, बहुत साफ हो गई।

असामान्य रूप से, महिला विशेषज्ञों का जीवन के प्रति एक उत्कृष्ट दृष्टिकोण होता है क्योंकि वे प्रतिबंधित मंडलियों को चुनौती देती हैं। अनीता देसाई ने एक बार एक मिलन समारोह में टिप्पणी की थी कि वह अपनी किताबों की बाहरी परत में महिलाओं के अवसरों के बारे में स्पष्टीकरण दे रही हैं। श्क्राई, द पीकॉकश में, उसने माया की दूरी को देखा है, जो अन्य सकारात्मक चरित्रों की किंवदंती है, जैसे कि शादी से उसकी माँ और शादी से उसकी बहन नीला, जो हड़ताली हैं और गिरने के बजाय अपने जीवन को स्थानांतरित करने की अनुमति देती हैं। आतंक में। ष्मार्कंडेय की रुक्मणी और इरा जैसा छोटा टुकड़ा नहीं है जो अपने विद्रोह के लिए जागरूक होने का आभास देता है, फिर भी अनुशासन को जीतता है, देसाई की महिलाएं वास्तव में पारंपरिक मेलों के साथ संघर्ष करती हैं।ष

अनीता देसाई की इन गार्जियनशिप में पुरुष और महिला पात्र। सुश्री देसाई ने वॉयस इन द सिटी और इस मध्य वर्ष में हम कहां जाएंगे? ष्एक सामान्य अर्थ में अस्तित्वगत प्रवृत्तियों के एक निबंधकार, अनीता देसाई सर्वेक्षणों ने अपनी किंवदंती के माध्यम से इस दृष्टिकोण (अस्तित्ववाद) के भौतिक वास्तविक कारकों को व्यक्त किया, निर्णय लेने वाले विषयों जैसे दूरी, आउटिंग और उसके सभी पूरी तरह से विकसित और पेचीदा चित्रण पैनकेक के साथ लड़ाई।

बातचीत

हम कमला दास को याद करने से कैसे चूक सकते हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं में महिलाओं के गैर–अनुरूपतावादी लोकाचार को दिखाया? उनके कार्यों के माध्यम से ब्रश करते हुए हम उत्कृष्ट चित्रों, एक कष्टप्रद मूल्यांकन और महिला कामुकता की शिकायत का सामना करते हैं। वह अपने समय से बहुत पहले की थी जब समाज प्रगति की आवाजों के लिए दृढ़ और दृढ़ था। दास, एक लौह महिला, अपने हिस्से में कसाई और नियामक मुद्दों को देखने के लिए एक साहसी महिला थी, जिसने अपने काम को एक अक्षम्य शत्रुता और समकालीन बढ़त दी। ष्उसका बचना खतरनाक था और समकालीन समय में सत्य था .... वह एक पुरुष संबोधित समाज में बहादुरी से काम करने वाली महत्वपूर्ण महिला है।ष सुरेश कोल ने कहा, जिन्होंने उनके साथ मिलकर श्च्वाइसश नाम से कृतियों की एक पुस्तक बनाई। यह वह सीधापन था जिसने दास को भारत में पश्चिम में सिल्विया प्लाथ की तरह एक धर्म का दर्जा दिया। उनका काम शो इस तिरस्कार और इनकार को देखता है

..... फिर, मैंने पहना एक कमीज

इसके अलावा, एक सुस्त सारंग,

मेरे बालों को छोटा कर दो और इस नारीत्व के एक टन को खारिज कर दिया।

साड़ी पहनो, जवान औरत बनो या साथी बनो।

विषय विशेषज्ञ के साथ रसोइया या झगड़ालू हो।

समकालीन साहित्य तथा मानवीय मूल्य

जीवन के लिए अपने अस्तित्व की लड़ाई में फंसी विभिन्न परतों की महिलाओं का ललाट प्रांतस्था यौन पाठ्यक्रम पर कम ध्यान देने वाले स्पष्ट निर्माताओं के लिए एक पूर्व–व्यवस्थित आधार रहा है। अनीता नायर संपादकीयवादियों के इस वर्ग के साथ हैं, जिन्होंने महिलाओं की गलत व्याख्या की है। महिला लेखिका ने समकालीन भारतीय महिलाओं के काम में कोई बर्फ तोड़ने वाला प्रस्ताव नहीं रखा है। उनका काम महिला की संभावनाओं पर चर्चा पर जोर देता है।

लेडीज व्हीकल में अखिला अंततरू अपने भीतर के धैर्य के स्रोत, ब्रेकिंग पॉइंट और उन हिस्सों को पाती है, जिन पर ध्यान नहीं दिया जाता है कि उसने किन खतरनाक अनुभवों का सामना किया। वास्तविक शीर्षक काम के अक्षम्य प्रदर्शन का एक टन है। लेडीज रोडस्टर, भारत में क्षणिक ट्रेन मुठभेड़ों के लिए अस्वीकार्य योजनाओं वाली महिलाओं के लिए एक असाधारण कम्पार्टमेंट है। परिवार की संवाहक अकिलांदेश्वरी ने 45 साल की उम्र में, अपने परिवार को दिखाते हुए, अपनी बहन को पेश करते हुए और अपने खून से की गई टिप्पणियों से निपटते हुए, उनके लिए अपने आनंद की भरपाई की। ट्रेन अंतर्दृष्टि जहां वह पांच और महिलाओं का सामना करती हैरू जानकी, जो अपने महत्वपूर्ण दूसरे के संबंध में अस्थिर महसूस करती हैय एक मार्गरेट, जो अपने अपमानजनक पीडोफाइल–भव्य साथी को उसकी दृढ़ता को कुचल कर दिखाती हैय एक छोटी सी युवा शीला, जो

लोगों के अध्यात्मवादी के माध्यम से देख सकती हैय एक प्रभा देवी, जो शांत और मजबूत होने के बीच झूलती हैंय और कुछ समय बाद हमारे पास एक मारीकोलुंधु है जो कुछ मोड़, मोड़ और जबरदस्त झटकों के लिए सुरक्षा के माध्यम से दृढ़ है। हम बहुत सी ऐसी महिला पात्रों से रूबरू होते हैं जिनसे हम मानक पर खरे उतरते हैं। सुश्री नायर ने समग्र भारतीय संस्कृति और असामान्य रूप से महिलाओं के शरीर और आत्मा पर ध्यान केंद्रित करने के लिए एक चतुर रणनीति बनाई थी। शशि देशपांडे का विचार है कि उनकी पुस्तकों को देवियों की भक्त समझ कर कार्यों में बाधा डाली जाती है और नाम के साथ रख दिया जाता है। उन्हें लगता है कि उनकी किताबें महिलाओं के मुक्त विचारक तनावों की व्यवस्था में लोगों के अनुभवों का खुला मूल्यांकन हैंय वे मुद्दों और अनुभवों की डिग्री के साथ कुछ अन्य की तरह किताबें हैं। हम जया, इंदु, सुमी के साथ खुद को अलग कर सकते हैं जो मजबूत, लुभावनी, अद्भुत महानगरीय महिला हैं जो खड़ी होती हैं, बर्फ तोड़ने वालों को मनाने का प्रस्ताव देती हैं, आत्मनिरीक्षण करती हैं और एक तेज में प्रगति करती हैं। भारत में बड़े पैमाने पर महिलाओं की स्थिति सूक्ष्म जगत।

साहित्य प्रतिष्ठान पुरस्कार प्राप्त करने वाले इस भ्रामक समाज में हर एक महिला की स्थिति में डूबे रहते हैं, जहां उन्हें परिवार की लिंच पिन होने की परवाह किए बिना एक आगामी ग्रेड स्थिति से अवगत कराया जाता है। देशपांडे ने एक महिला के खुद के अंदर हस्तक्षेप करने के अस्थिर प्रभाव को चित्रित किया है। मां और बेटी के रिश्ते के बीच की तल्खी असर करने की प्रवृत्ति और ऊर्जा पर निर्भर करती है, जो छाया में कोई डर नहीं रखती है। युवती सरू को दोस्ती और गर्मजोशी से वंचित किया जाता है, जो उसके परिवार ध्रुव के लिए बहुत अच्छा है। वह बिना किसी झिझक के झटके देती है ष्एक तरह की शर्म ने मुझ पर हावी हो गई, जिससे मुझे अपनी माँ के रूप में एक समान वर्ग में रखने के तरीके के खिलाफ चिल्लाना पड़ा।ष डे की महिलाएं सामान्य सामान्य प्रथाओं को परेशान करती हैं जो उन्हें व्यक्तियों के उत्कृष्ट विचार के तहत रखती हैं। वे अपने असाधारण, अद्वितीय व्यक्ति को फैलाने के लिए झिझकते हैं। वे अपने स्वयं के स्थान के लिए आवश्यक के रूप में देखे जाने से परेशान हैं और चाहे कितनी भी संभावनाएँ हों, इसे प्राप्त करें। वे अपने इष्टतम लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कठिनाइयाँ उठाने से पीछे नहीं हटेंगे।

उन्होंने मनुष्य के साथ पत्राचार के अपने अधिकार की नई वास्तविकता का पता लगा लिया है। उन्हें धन और हैसियत की सीढ़ी के रूप में मनुष्य की आवश्यकता है और उसका उपयोग करते हैं। निरंतर लेख पुरुष संचालित समाज के खिलाफ उनकी लड़ाई में एक क्लब के रूप में उद्देश्यहीन जीवन शैली से डे की महिलाओं की स्वतंत्रता को समेकित करता है। इस तरह डे की महिला पात्र अवसर की तलाश में उन्हें शातिर व्यवसायिक बना देती हैं, न कि मानक महिलाओं की तरह जो अधिकांश भाग के लिए नैतिक और नकदी संबंधी सहायता के व्यापक संयोजन के लिए व्यक्तियों पर निर्भर करती हैं।

मूल रूप से डे की पुस्तकों में प्रत्येक महिला व्यक्ति पैसे के मामलों को नियंत्रित करने के प्रभाव के लिए तड़प रही है, पैसे के मामलों को नियंत्रित करने के प्रभाव और पैसे के मामलों को नियंत्रित करने के लिए संघर्ष कर रही है।

उनकी किताबों में महिलाओं को वास्तव में मुक्त और असंतुष्ट के रूप में दिखाया गया है, जिन्हें ष्नई महिलाष् के रूप में नामित किया गया है। ये कथित नई महिलाएं अनिवार्य रूप से अपनी माताओं की तुलना में अधिक उपन्यास और वास्तव में आश्चर्यजनक हैं। महिलाओं की पैरवी करने वाली लगातार मॉडल, एक पत्रिका (1927) बनी उस की भावना ष्नई महिला वास्तव में एक प्रवेश द्वार, कामुकता और महिलाओं के भक्त स्वार्थ और सामान्य क्षेत्र की महिलाओं की असंतुष्टता के साथ उत्साह का मिश्रण है, एक ऐसी महिला जो आनंद, काम और विवाह को मजबूत कर सकती है। वे आनंद में भाग लेने के लिए बेचौन रहते हैं जैसे वे खेल, काम आदि में करते हैं।ष

उनके निर्देशकों का हर काम, चाहे वह करुणा, अपर्णा, मिक्की, अलीशा या आशा रानी हों, विद्रोही वर्तमान भारतीय महिलाएं हैं जो सामाजिक कटऑफ बिंदुओं की व्यापकता को चुनौती देती हैं। वे वास्तव में विचारहीन भारतीय महिला की तरह उपन्यास हैं जो अधिकांश भारतीय पुरुष परीक्षकों के लिए बेहद खतरनाक है, जो महसूस करते हैं कि सेक्स किसी भी तरह के भविष्य के परिवार के लिए पुरुष की तड़प के लिए भयानक तनाव है।

निष्कर्ष

दुनिया की एक और बाढ़ गैर किरायेदार भारतीय झुम्फा लाहिड़ी द्वारा प्रस्तुत की गई है जो श्द नेमसेकश में एक समझदार आशिमा का चित्रण करती है। आशिमा एक ऐसे देश में रहती है जहां लोग सच में सोचते और जीते हैं। नितिन सॉहले लोपसाइड आधारित अवरोधों में टिप्पणी करते हैं कि ष्महिलाओं के जोखिम अनुरोध का एक भयानक दुश्मन है क्योंकि लाहिड़ी दिखाती हैं कि कैसे मानक प्रमुख व्यवसाय, पश्चिमी दुनिया में अधीनस्थ के रूप में देखे जाने वाले समय का एक बड़ा हिस्सा, समर्थन की एक शांत ऊर्जा लाता है।ष शानदार ढंग से, लाहिरी हमें पश्चिमी सेटिंग में आशिमा पर विचार करने से रोकती है, जिससे हमें उसके कॉम्पैक्ट व्यक्ति की खोज में मदद मिलती है, अप्रत्याशित रूप से पारम्परिक महिला के भेद (बल्कि एक स्थानांतरित और जटिल विषय) का अवसर मिलता है।

इस तरह से भारतीय महिला निर्माताओं का खाका भारती मुखर्जी, नर्गिस दलाल, शोभा डे, इंदिरा गोस्वामी, मालती चेंदूर, रूथ झाबवाले और कुछ अन्य जैसे हड़ताली नामों को समेकित करता है। वे आरक्षण और प्रदूषण की रिहाई के रूप में योग्यता पर नियंत्रण प्राप्त करते हैं। फिर भी भारतीय कार्यों की जांच करते समय एक शक्ति है, लाइनों के माध्यम से लहराती हमारी अपनी प्रतिध्वनि की ऊर्जा, एक छाया हमारा पीछा कर रही है और कौन जानता है कि श्मस्तिष्क उड़ाने वाले मोरश में बदल जाए।

संदर्भ

शोशना एम. लैंडो (नृविज्ञान, 302, प्रिंसटन विश्वविद्यालय। 1989)

अनीता देसाई की श्इन कस्टडीश में पुरुष और महिला पात्र

कसौटी, अंग्रेजी में एक अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। आईएसएसएन 00976–8165

दास, कमला। श्द बेस्ट ऑफ कमला दास। एड.पी.पी. रवींद्रन, कालीकटरू बोधी पब्लिशिंग हाउस, 1991 प्रिंट)

कमला दास की नारीवादी कविता की खोज– हिंदुस्तान टाइम्स, 3 अप्रैल, 2012

भारतीय अंग्रेजी साहित्य में महिला लेखकों पर अधिक ीजजचरू ध्ू पदकपंदमज्रवदमध43ध्वउमदऋूतपजमते

द डार्क होल्ड्स नो टेरर्स, पेंगुइन बुक्स इंडिया (1980), नायर, अनीता लेडीज कूप